मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम- रामनवमी

रामायण की कथा के नायक श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, यह तो सभी को ज्ञात है; किन्तु यदि यह पूछा जाए कि श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम कैसे बने, तो शायद कई मनुष्यों को आश्चर्य होगा। जिस प्रकार दुनिया के हर सफल व्यक्ति के पीछे कोई-न-कोई ज़रूर होता है; उसी प्रकार सभी मनुष्यात्माओं में सर्वोत्तम श्री राम को भी किसी-न-किसी ने ज़रूर ऐसा बनाया होगा। वह कोई और नहीं, स्वयं परमपिता शिव हैं, जिन्हें और धर्मों में ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा, गॉडफादर आदि नामों से जाना जाता है। वह निराकार परमपिता शिव कलियुगांत में गीता के ''प्रवेष्टुम्'' (11/54) अनुसार किसी साकार मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं, जिसके लिए गीता में कहा है- ''त्वमादिदेवः पुरुष: पुराण:'' अर्थात् प्रथम आदिपुरुष हैं, जिनका हर धर्म में आदम, एडम, आदिनाथ के रूप में गायन है। तो शिव निराकार उस प्रथम पुरुष आदिदेव जो सभी मनुष्यात्माओं में सर्वश्रेष्ठ हैं, उनको यह सर्वोपरि ज्ञान देते हैं, जो पूरी रीति अपने जीवन में प्रैक्टिकल धारण कर, ईश्वर की बताई हुई मर्यादाओं का पालन कर पुरुषोत्तम राम कहलाए जाते हैं।

रामायण में बताते हैं- रावण ने मनुष्यों की सेना ली और राम ने बंदरों की तो क्या सचमुच श्रीराम को मनुष्य नहीं मिले, जो बंदरों की सेना लेना पड़ी हो! वास्तव में वह कोई जानवर बंदरों की बात नहीं है, आज के मनुष्य की बुद्धि ही बंदरों जैसी विकारी बन चुकी हैं। श्रीराम उन बंदर बुद्धि मनुष्यों को ही आकर मंदिर लायक अर्थात् देवता बनाते हैं। वही राम साकार रामराज्य की स्थापना करते हैं, जिस रामराज्य का गायन है कि जहाँ ''दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, रामराज्य काहू नहीं व्यापा'' अर्थात् न देह का दुख होता है, न भाग्य का दुर्भाग्य होता है। भौतिक तापा माने न हवा जोर से चलती है और न ही भूकम्प आते हैं कि सारे मकान गिरने लगें और सारे लोग तितर-बितर हो जाएँ। वहाँ प्रकृति भी सुखदाई होती है। रामराज्य में तो शेर-बकरी भी एक घाट पानी पीते हैं, ऐसा पवित्र वातावरण रहता है कि हिसक शेर भी हिसा नहीं करते। रामराज्य में यथा राजा तथा प्रजा अर्थात् राजा प्रजा का पालन बच्चे के रूप में और प्रजा राजा को पिता की दृष्टि से देखते हैं। उस रामराज्य में क्या रावण होता है, जो सीता का हरण करे? वास्तव में हम मनुष्यात्मा रूपी सीताएँ द्वापरयुग से देह-अभिमान में आने के कारण 5 विकारों रूपी रावण की शोक वाटिका में कैद हो गईं, जिन्हें छुड़ाने के लिए सुप्रीम सोल शिव राम के साकार तन में प्रवेश कर अपनी इन्द्रियों पर जीतने की कला अर्थात् सहज राजयोग सिखाते हैं और ईश्वरीय मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखा भी बताते, जिसके भीतर रहने पर हम विकारों रूपी रावण से बचे रहते हैं। वर्तमान समय में ही रावण अर्थात् दसों मतें चलाने वाले रावण का प्रैक्टिकल पार्ट चल रहा है तो रावण का अंत करने के लिए श्रीराम भी प्रैक्टिकल में अपना कार्य कर रहे हैं और इस विकारी रावणी दुनिया का खलासा कर सत्धर्म की स्थापना कर रहे हैं, जिस रामराज्य में अहिसा, सत्य, प्रेम, सुख, शांति, समृद्धि रहती है। रामराज्य का गायन त्रेता का है, जब सतयुग में 8 जन्म पूरे होते हैं तो 9 वाँ जन्म त्रेता में राम का होता है, उसकी यादगार में ही रामनवमी मनाई जाती है। अब हमें साकार रूप में आए राम को पहचानकर उनके द्वारा सिखाए जा रहे ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें- मो.9891370007 website-WWW.PBKS.INFO YouTube-AIVV